

---

anAdikalpeshvarastotram

अनादिकल्पेश्वरस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : anAdikalpeshvarastotram

File name : anAdikalpeshvarastotram.itx

Category : shiva, vAsudevAnanda-sarasvatI

Location : doc\_shiva

Author : vAsudevAnandasarasvatI TembesvAmi

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1 newer, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar, stotrasankhyA 225

Latest update : March 25, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

## anAdikalpeshvarastotram

---

### अनादिकल्पेश्वरस्तोत्रम्

---



श्रीगणेशाय नमः ॥

कर्पूरगौरो भुजगेन्द्रहारो गङ्गाधरो लोकछितावळः सः ।  
सर्वेश्वरो देववरोऽप्यधोरो योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ १ ॥

डैलासवासी गिरिजविलासी श्मशानवासी सुमनोनिवासी ।  
काशीनिवासी विजयप्रकाशी योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ २ ॥

त्रिशूलधारी भवदृग्भङ्गारी कन्दर्पवैरी रजनीशधारी ।  
कपर्दधारी भजकानुसारी योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ३ ॥

लोकाधिनाथः प्रमथाधिनाथः कैवल्यनाथः श्रुतिशास्त्रनाथः ।  
विद्यार्थनाथः पुरुषार्थनाथो योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ४ ॥

लिङ्गं पश्चिच्छेत्तुमधोगतस्य नारायणश्चोपरि लोकनाथः ।  
अभूवतुस्तावपि नो समर्थो योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ५ ॥

यं रावणस्ताण्डवकौशलेन गीतेन यातोषयदस्य सोऽत्र ।  
कृपाकटाक्षेण समृद्धिमाप योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ६ ॥


सकृद्य्य बाणोऽवनमय्य शीर्षं यस्याग्रतः सोऽप्यलभत्समृद्धिम् ।  
देवेन्द्रसम्पत्त्यधिकां गरिष्ठां योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ७ ॥

गुणान्विमातुं न समर्थं अेष वेषश्च जुवोऽपि विदुषिष्ठतोऽस्य ।  
श्रुतिश्च नूनं यदितं अभाषे योऽनादिकल्पेश्वर अवेव सोऽसौ ॥ ८ ॥


अनादिकल्पेश उमेश अतस्तवाष्टकं यः पठति त्रिकालम् ।  
स धौतपापोऽपिलोकवन्द्यं शैवं पदं यास्यति भक्तिमांश्रेत् ॥ ९ ॥

ॐ श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीकृतं अनादिकल्पेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by PSA Easwaran

——  
*anAdikalpeshvarastotram*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

